ISSN
2320 –7566

भारत में गुरुकुल परंपरा से डिजिटल युग तक; शैक्षिक विकास और परिवर्तन

डॉ विशाल शुक्ला

असिस्टेंट प्रोफेसर
अरमापुर पी.जी. कॉलेज,कानपुर

आकांक्षा दीक्षित

शोध छात्रा
अरमापुर पी.जी. कॉलेज,कानपुर

==

प्रस्तावना-

डॉ ए० एन० मुखर्जी का कहना है "प्राचीन कालीन भारत शिक्षा की पारिवारिक प्रणाली में विश्वास करता था न कि शिक्षा संस्थानों में यांत्रिक विधियों द्वारा विशाल पैमाने पर छात्रों के उत्पादन में"

भारत की शैक्षिक यात्रा उसकी सांस्कृतिक और बौद्धिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा है, जो प्राचीन काल की गुरुकुल परंपरा से लेकर वर्तमान डिजिटल युग तक के विकास को दर्शाती है। प्राचीन शिक्षा का उदय वेदों से हुआ है वेद भारतीय जीवन दर्शन के स्रोत तथा आधार हैं, **वेद का अर्थ है- जानना**। वेदों की संख्या चार है ऋग्वेद ,यजुर्वेद, सामवेद और अर्थवेद। ऋग्वेद को प्राचीनतम वेद माना जाता है जिसमें ज्ञान की व्याख्या की गई है इसमें ऋचाओं के माध्यम से विषयों पर प्रकाश डाला गया है जो ज्ञान रूप की ओर संकेत करते हैं वास्तव में वेद उस समय के ज्ञान कोष हैं। प्राचीन भारतीय शिक्षा का प्रादुर्भाव लगभग 4000 वर्ष पूर्व हुआ था किंतु उसका व्यवस्थित स्वरूप वैदिक काल में प्रारंभ हुआ प्राचीन भारतीय शिक्षा का प्रारंभ कार्य 2500 ईसा पूर्व से 1200 ई. तक माना जाता है भारत में 2500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व तक वेदों का वर्चस्व रहा है। इतिहासकारों के द्वारा इस काल को वैदिक काल कहा जाता है वैदिक कालीन शिक्षा वैदिक धर्म, दर्शन और वेदों पर आधारित है जिस कारण उसे वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था कहा जाता है गुरुकुल प्रणाली, भारत की सबसे प्राचीन और प्रभावशाली शिक्षा प्रणाली मानी जाती है, जो छात्र के **सर्वांगीण विकास** पर केंद्रित थी। इस प्रणाली के तहत, छात्रों को गुरु के निकट सानिध्य में रहकर न केवल शैक्षणिक ज्ञान प्राप्त होता था, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मार्गदर्शन मिलता था, चाहे वह **नैतिकता हो, आध्यात्मिकता हो या व्यावहारिक जीवन कौशल**। गुरुकुल प्रणाली का मूल उद्देश्य छात्रों को सिर्फ विद्वान बनाना नहीं, बल्कि उन्हें एक अच्छा मनुष्य और जिम्मेदार नागरिक बनाना था, जिससे वे समाज और संस्कृति के साथ गहनता से जुड़ सकें।

वैदिककाल एवं बौद्धकाल में शिक्षा के विकास के पश्चात मध्यकाल के उदय में मुस्लिम शासकों द्वारा वैदिक शिक्षा प्रणाली को ध्वस्त करने का अटूट प्रयास किया गया। परिणामस्वरूप पुरातन शिक्षा केंद्रों की उपेक्षा ही नहीं की गयी अपितु उनको नष्ट करने के प्रयत्न भी किए गए तथा उनके स्थानों पर मुस्लिम शिक्षा केंद्रों की स्थपना की गयी और भारत में इस्लाम धर्म के सिद्धांतों के आधार पर मुस्लिम शिक्षा प्रणाली को जन्म दिया दिया। तत्पश्चात औपनिवेशिक शासन (ईस्ट इंडिया कंपनी) के आगमन और उसके साथ पश्चिमी शिक्षा प्रणाली की शुरुआत के बाद, भारत की पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली को एक बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा। **ब्रिटिश शासकों** ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए **औपचारिक स्कूलों** और **मानकीकृत पाठ्यक्रमों** की नींव रखी, जिससे गुरुकुल प्रणाली का प्रभाव धीरे-धीरे कम होने लगा। यह परिवर्तन शैक्षिक दृष्टिकोण में एक बुनियादी बदलाव था, जहाँ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य पश्चिमी मानकों पर आधारित था। इसमें विज्ञान, गणित, और अन्य व्यावहारिक विषयों पर अधिक महत्व दिया गया, जो ब्रिटिश साम्राज्य की नौकरशाही और प्रशासनिक आवश्यकताओं के अनुकूल था। परंतु इसके साथ वैदिक शिक्षा के मुख्य उद्देश्य आध्यातमिक विकास का ह्रास होने लगा और शिक्षा केवल व्यवसाय का एकमात्र साधन बन गई। परंतु शिक्षा का मूल उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन काल में था। आज के **डिजिटल युग** में शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव देखे जा रहे हैं। प्रौद्योगिकी के विकास ने शिक्षा को एक नई दिशा दी है, जिसमें **ई-लर्निंग प्लेटफार्मों, ऑनलाइन कोर्सों, और वर्चुअल कक्षाओं का प्रमुख स्थान है।** अब ज्ञान अर्जित करने के लिए भौतिक सीमाओं की कोई बाधा नहीं रही है। एक छात्र किसी भी समय, किसी भी स्थान से शिक्षा प्राप्त कर सकता है। शिक्षा का यह नया डिजिटल स्वरूप इसे अधिक सरल, लचीला, और समावेशी बना रहा है। विशेष रूप से भारत जैसे देश में, जहाँ भौगोलिक और आर्थिक असमानताएँ शिक्षा तक पहुँच को बाधित करती थीं वहाँ डिजिटल शिक्षा ने एक नया रास्ता दिखाया है। यह उन छात्रों के लिए एक वरदान साबित हो रही है, जो संसाधनों की कमी के कारण गुणवत्ता वाली शिक्षा से वंचित रह जाते थे।

भारत सरकार ने **विकसित भारत 2047** के लक्ष्य के तहत शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव की योजना बनाई है। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य भारत को **आत्मनिर्भर और वैश्विक शक्ति** के रूप में स्थापित करना है, जहाँ शिक्षा का प्रमुख स्थान होगा। यह एजेंडा न केवल शिक्षा की पहुँच को व्यापक बनाना चाहता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना चाहता है कि शिक्षा की गुणवत्ता सर्वोत्तम हो। इसके लिए **डिजिटल प्रौद्योगिकी और नवाचारों** का व्यापक उपयोग किया जाएगा। भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए शिक्षा को डिजिटल युग के साथ जोड़कर एक नई दिशा देने की आवश्यकता है। **विकसित भारत 2047** एजेंडा में शिक्षा को एक ऐसी प्रणाली के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक तकनीकी प्रगति के बीच संतुलन बनाया जाएगा। इस योजना का उद्देश्य न केवल छात्रों को तकनीकी

रूप से कुशल बनाना है, बल्कि उन्हें **नैतिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक दृष्टिकोण** से भी सक्षम बनाना है। गुरुकुल प्रणाली के जो मूल्य कभी भारत की शैक्षिक धरोहर का हिस्सा थे—जैसे **समग्र विकास, नैतिकता, आध्यात्मिकता और गुरु-शिष्य संबंध** उन्हें आधुनिक डिजिटल शिक्षा में फिर से पुनर्जीवित किए जाने की आवश्यकता है। यह एजेंडा शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करके एक ऐसा वातावरण बनाने पर बल देता है, जहाँ प्रत्येक छात्र को समान अवसर मिल सके और वह अपने व्यक्तिगत और सामाजिक दायित्वों को समझते हुए जीवन में आगे बढ़ सके।

भारत के शैक्षिक विकास की यह यात्रा गुरुकुल के मूल्यों से शुरू होकर डिजिटल युग तक पहुँची है, और अब इसे **विकसित भारत 2047** के लक्ष्य के माध्यम से एक नए स्तर पर पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति :

वैदिक काल में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारतीय समाज की प्रमुख शिक्षा व्यवस्था थी, जो केवल शैक्षणिक ज्ञान नहीं, बल्कि **नैतिक और आध्यात्मिक विकास** पर भी आधारित थी। यह प्रणाली प्राचीन भारतीय संस्कृति और ज्ञान की धरोहर थी, जहाँ शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ विषयों की जानकारी देना नहीं, बल्कि छात्र के **संपूर्ण विकास** पर केंद्रित था।

"यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः"

प्राचीन काल में हमारे ऋषि मुनियों ने कहा है इस जन्म में सांसारिक उन्नति और उसे छूटने पर मोक्ष की प्राप्ति ही धर्म है इसका धर्मपूर्वक आचरण करना ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है वैदिक काल में मानव जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति हेतु ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रमों का पालन करना था। प्राचीन काल से ही शिक्षा का अर्थ **"आत्मानं विद्धि"** अर्थात अपने को जानो रहा है।

गुरुकुल प्रणाली **गुरु और शिष्य के गहरे संबंध** पर आधारित थी। छात्र, जिन्हें ब्रह्मचारी कहा जाता था, गुरुओं के आश्रमों में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे, जिन्हें **गुरुकुल** कहा जाता था। यह शिक्षा **निःशुल्क** होती थी और छात्रों से गुरु दक्षिणा के रूप में सेवा की अपेक्षा की जाती थी। सामाजिक भेदभाव से परे, इस प्रणाली में सभी को समान शिक्षा का अवसर मिलता था।

गुरुकुलों में मुख्यतः **वेदों का अध्ययन** कराया जाता था, जिसमें **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद** शामिल थे। इसके अलावा **गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद और धनुर्विद्या** जैसे विषयों की भी शिक्षा दी जाती थी। **शिक्षा का माध्यम मौखिक था,** जहाँ छात्र शास्त्रों का पाठ कंठस्थ करते थे और गुरु द्वारा परीक्षा ली जाती थी।

वैदिक काल में प्रकृति के आधार पर शिक्षा का पाठ्यक्रम **दो रूपों** में विभक्त था- **अपरा (भौतिक पाठ्यक्रम) परा (आध्यात्मिक पाठ्यक्रम)**

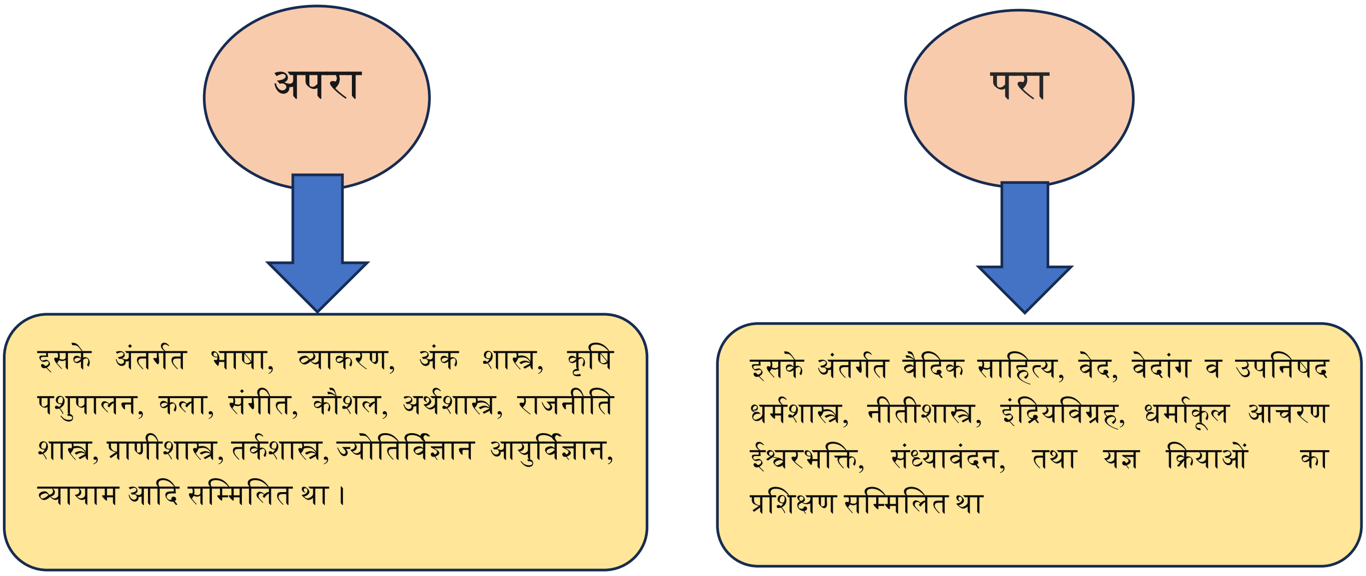

प्राकृतिक परिवेश में स्थित गुरुकुल छात्रों को न केवल शास्त्रों का ज्ञान देते थे, बल्कि जीवन के **व्यावहारिक अनुभव** भी प्रदान करते थे। इस प्रणाली में **अनुशासन और आत्मनिर्भरता** पर विशेष जोर दिया जाता था, जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास होता था। गुरुकुल शिक्षा का उद्देश्य समाज के लिए योग्य और **चरित्रवान नागरिक** तैयार करना था, जो भविष्य में विद्वान और विचारक बनते थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर जी के शब्दों में –
" भारत के वनों से सभ्यता की जो धारा प्रवाहित हुई, उसने सम्पूर्ण भारत को आप्लावित कर दिया।"
वैदिककाल में गुरुकुल में उच्च शिक्षा प्रदान ली जाती थी। उत्तर वैदिक काल में गुरुकुल बड़े नगरों व तीर्थ स्थानों के पास स्थापित होने लगे थे। धीरे धीरे यह उच्च शिक्षा के केंद्रों के रूप में विकसित हो गए। **तक्षशिला, केकय, मिथिला, काशी, प्रयाग, अयोध्या, नासिक, कांची** उस समय के प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र थे।

वर्तमान डिजिटल युग में गुरुकुल शिक्षा की प्रासंगिकता –
आज का समय तकनीकी उन्नति का है प्रत्येक क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग ने मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है।
भारत सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर नेतृत्व कर रहा है। डिजिटल इंडिया अभियान पूरे देश को एक डिजिटल रूप से सक्षम समाज और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। इस परिवर्तन में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ प्रौद्योगिकी भी शैक्षिक प्रक्रियाओं और परिणामों में सुधार लाने में अहम भूमिका निभा रही है। इस प्रकार, सभी स्तरों पर प्रौद्योगिकी और शिक्षा के बीच एक गहरा और समन्वित संबंध स्थापित हो रहा है।

भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की परिकल्पना के तहत, शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में उभर रही है। इस संदर्भ में, **गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन और इसके मूल्यों को आधुनिक डिजिटल युग में पुनः स्थापित करना भारत के शिक्षा तंत्र को मजबूत और समृद्ध बना सकता है।** गुरुकुल प्रणाली, जो भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा का आधार थी, वर्तमान में इसकी आवश्यकता की अनुभूति की जा रही है। **गुरुकुल शिक्षा की की मूल भावना आध्यात्मिक विकास, नैतिकता का विकास,और समग्र विकास में निहित है,** जो आज के समय में और भी महत्वपूर्ण हो गई हैं। जब हम विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण की बात करते हैं, तो यह आवश्यक है कि हम अपने शैक्षिक ढांचे को पुनः परिभाषित करे जहाँ गुरुकुल के मूल्य आधुनिक तकनीकी और डिजिटल युग में भी सशक्त भूमिका निभा सकेंगे।

1. नैतिकता और मूल्य आधारित शिक्षा: डिजिटल युग में जहां सूचनाओं की अधिकता और तकनीकी विकास ने हमारे जीवन को सरल बना दिया है, वहीं नैतिकता और मूल्यों में ह्रास भी हो रहा है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के मूल्यों को आधुनिक डिजिटल शिक्षा में शामिल किया जाए, तो यह छात्रों को न केवल तकनीकी रूप से सक्षम बनाएगा, बल्कि उन्हें नैतिक दृष्टि से भी सशक्त करेगा।

2. समग्र विकास और आत्म-निर्भरता:

गुरुकुल शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों का समग्र विकास था। डिजिटल युग में, जहां शिक्षा ऑनलाइन माध्यमों और तकनीकी संसाधनों पर केंद्रित हो गई है, समग्र विकास का महत्व कम होता जा रहा है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति को डिजिटल माध्यमों से जोडकर समग्र विकास ,जहाँ **तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ योग, ध्यान, और नैतिक शिक्षा** को भी पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए।

3. गुरु-शिष्य संबंध की पुनर्परिभाषा:

गुरुकुल शिक्षा में गुरु और शिष्य का संबंध अत्यधिक महत्वपूर्ण था, जहाँ शिक्षक न केवल ज्ञान देने वाले होते थे, बल्कि छात्रों के मार्गदर्शक और जीवनशैली के आदर्श भी होते थे। डिजिटल युग में, जहाँ शिक्षा की पहुँच व्यापक हो गई है परंतु शिक्षकों से छात्रों की दूरी बढ़ती जा रही है, इस गुरु-शिष्य संबंध को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है।

4. व्यक्तिगत शिक्षा की प्रासंगिकता: गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा वैयक्तिक रूप से दी जाती थी, जहाँ प्रत्येक छात्र की रुचियों और क्षमताओं के आधार पर शिक्षा का स्वरूप तय किया जाता था। आज के डिजिटल युग में, जहाँ शिक्षा का एक मानकीकृत स्वरूप अपनाया जाता है, व्यक्तिगत शिक्षा की आवश्यकता और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। ताकि प्रत्येक छात्र अपनी विशिष्ट क्षमताओं का विकास कर सके।

5. सहयोगात्मक और सामुदायिक शिक्षा:

गुरुकुल प्रणाली में छात्रों को सामूहिक रूप से शिक्षा दी जाती थी, जहाँ शिक्षा प्राप्ति हेतु एक दूसरे का सहयोग करना एवं सामूहिक कार्यों व प्रयासों पर बल दिया जाता था। डिजिटल युग में, जहाँ ऑनलाइन शिक्षा ने

वैयक्तिकता को बढ़ावा दिया है, इस सामुदायिक भावना को पुनः जीवंत करने की आवश्यकता है जिसके लिए डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर, समूह परियोजनाओं, सामूहिक चर्चाओं और सहयोगात्मक अधिगम के माध्यम से छात्रों में सामुदायिक और सहयोग की भावना विकसित की जा सकती है।

6. नवाचार और निरंतर सीखने की परंपरा:

गुरुकुल शिक्षा में शिक्षा को एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया माना जाता था, डिजिटल युग में, जहाँ तकनीकी विकास तेजी से हो रहे हैं और ज्ञान की सीमा निरंतर बढ़ रही है, यह महत्वपूर्ण है कि छात्रों को निरंतर सीखने की परंपरा से जोड़ा जाए। विकसित भारत 2047 के लिए, यह आवश्यक है कि डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग करते हुए छात्रों को **जीवन कौशल** की शिक्षा भी प्रदान की जाए, जो उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार कर सके और उन्हें जीवनपर्यंत सीखने की प्रेरणा दे।

7. प्रकृति और पर्यावरण से जुड़ाव:

गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा छात्रों को प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा दी जाती थी, जिससे उनका प्रकृति से गहरा जुड़ाव होता था। आज के डिजिटल युग में, जहाँ तकनीक और शहरीकरण के चलते प्रकृति से दूरी बढ़ गई है जिस कारण कई पर्यावरणीय समस्याएं दृश्यमान हो रही हैं। जिसके समाधान में शिक्षा का महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

गुरुकुल प्रणाली के पुनर्गठन हेतु विकसित भारत 2047 के माध्यम से भारत सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास :

भारत सरकार ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन और उसे आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ जोड़ने के लिए कई कदम उठाए हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली के मूल्यों और सिद्धांतों को आधुनिक युग में लागू करना है निम्न कुछ प्रमुख सर कारी प्रयासों का उल्लेख किया गया है:

1. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020:** भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने गुरुकुल शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति के कई महत्वपूर्ण पहलुओं को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है। इस नीति में **समग्र विकास, नैतिक शिक्षा, और भारतीय ज्ञान परंपराओं** को बढ़ावा देने की बात कही गई है। NEP 2020 के निम्न बिंदुओं को समावेशित किया गया है-

- **भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश:** प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, जैसे गुरुकुल शिक्षा के संदर्भ में पारंपरिक ज्ञान और शिक्षण पद्धतियों को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में सम्मिलित करने पर बल दिया जा रहा है। इसके अनतर्गत **वेदों, उपनिषदों, और पुराणों जैसे भारतीय ग्रंथों और साहित्य का अध्ययन और प्रसार किया जा रहा है।**

- **संस्कृत का संवर्धन:** संस्कृत को भारतीय संस्कृति की धरोहर मानते हुए इसे स्कूल और उच्च शिक्षा में बढ़ावा देने का प्रावधान किया गया है। साथ ही अन्य प्राचीन भाषाओं (पाली, प्राकृत) को भी प्रोत्साहित किया गया है।
- **भारतीय कला, संस्कृति और मूल्यों का अध्ययन:** छात्रों को भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और जीवन कौशल से जोड़ने के लिए पाठ्यक्रम में भारतीय कलाओं, दर्शन, योग, और साहित्य का समावेश किया जाएगा।
- **बहुभाषिकता को बढ़ावा:** प्राथमिक स्तर से ही मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया जा रहा है, जिससे स्थानीय भाषाओं और भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया जा सके। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति में **त्रिभाषा सूत्र** का उल्लेख किया गया है तथा संस्कृत एवं अन्य शास्त्रीय भाषाओं के अध्ययन पर बल दिया जा रहा है
- **प्राचीन शिक्षा संस्थानों का पुनरुद्धार:** गुरुकुल, तक्षशिला, नालंदा जैसे प्राचीन शिक्षण संस्थानों के महत्व को समझते हुए, इनकी शिक्षण पद्धतियों का पुनरुद्धार और आधुनिक युग के अनुरूप ढालने का प्रयास किया जा रहा है, अभी हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा **19 जून 2024 को बिहार के रागगीर जिले में नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन किया**
- **वैदिक शिक्षा और पारंपरिक ज्ञान:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा वैदिक शिक्षा, योग, आयुर्वेद, ज्योतिष जैसे पारंपरिक ज्ञान के क्षेत्रों को मुख्यधारा की शिक्षा में समाहित करने के लिए पहल की जा रही है। इन विषयों के अध्ययन का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा और शैक्षिक धरोहर को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ जोड़कर एक समग्र और मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करना है।
- **योग शिक्षा को बढ़ावा :** ध्यान एवं योग भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण पहेलुओं में से एक है। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षण प्रणाली में योग शिक्षा को भी समान महत्व देने का प्रयास कर रही है। जिससे व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। इस उदेश्य की प्राप्ति हेतु यूजीसी ने 11 केंद्रीय विश्वविद्यालयों में योग विभाग स्थापित किए एवं 2017 में योग विषय में भी नेट की परीक्षा कराना प्रारम्भ किया। 2019-20 तक, 306 विश्वविद्यालय और 182 कॉलेज योग कार्यक्रम चला रहे हैं।

2. वैदिक शिक्षा बोर्ड का गठन:

भारत सरकार ने वैदिक शिक्षा को बढ़ावा देने और गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से **वैदिक शिक्षा बोर्ड** की स्थापना की है। इस बोर्ड का मुख्य उद्देश्य देशभर में गुरुकुल शिक्षा के प्रसार और विकास के लिए नीतियां बनाना है इसके तहत वैदिक गुरुकुलों के पाठ्यक्रमों को मान्यता दी जा रही है। वैदिक शिक्षा

को आधुनिक पाठ्यक्रम के साथ जोड़ा जा रहा है, **MSRVSSB (महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड) की स्थापना 8 अगस्त, 2022** को की गई, जिसमें अभी **उज्जैन** वेद शिक्षा बोर्ड का एकमात्र केंद्र है। इसके साथ ही 5 नए क्षेत्रीय बोर्ड के स्थापना की तैयारी की जा रही है ।

देश भर में इस बोर्ड से सम्बद्ध 123 पाठशालाएं हैं, जहां 4,600 छात्र पढ़ रहे हैं और इन पाठशालाओं में 632 शिक्षक हैं। 258 गुरु-शिष्य परंपरा इकाइयों में 2,240 छात्र और 430 शिक्षक हैं।

3. स्वदेशी भाषाओं का विकास एवं संवर्धन :

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में स्वदेशी भाषाओं का वर्चस्व था, भारत सरकार ने स्वदेशी भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। स्कूलों और कॉलेजों में **भारतीय भाषाओं** में शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है। **वैदिक और प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन और अनुवाद स्वदेशी भाषाओं में कराया जा रहा है,** जिससे छात्रों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ने का अवसर मिले। इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कई अन्य प्रयास किए जा रहें हैं जो कि इस प्रकार हैं -

- **अनुवादिनी** नामक स्वदेशी कृत्रिम बुद्धि आधारित उपकरण को **5 अक्टूबर 2021** को शुरू किया गया था। इसे **आईआईटी मद्रास** द्वारा भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के उद्देश्य से विकसित किया गया है। इसका उदेशय विभिन्न भारतीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री को उपलब्ध कराना और भाषाई विविधता को बनाए रखना है।
- इसी क्रम में 2021 के बजट में वित्त मंत्री द्वारा **'राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन'** (NLM) जिसे **'भाषिणी'** भी कहा जाता है, की घोषणा की गई थी, और यह **मार्च 2022** में तीन वर्षीय मिशन के रूप में शुरू हुआ। इसका उद्देश्य प्राकृतिक भाषा प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके विभिन्न भाषाओं के बीच अनुवाद को सरल बनाना है। इसका लक्ष्य है कि सभी भारतीय अपनी भाषाओं में इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं तक आसानी से पहुंच सकें और भारतीय भाषाओं में सामग्री को बढ़ावा मिले।

4. भारतीय संस्कृति और धरोहर का संवर्धन:

सरकार ने **भारतीय संस्कृति और धरोहर** को बढ़ावा देने के लिए योजनाएं शुरू की हैं जिनमें गुरुकुल प्रणाली से जुड़े कार्यक्रम भी शामिल हैं। इसके तहत:

- छात्रों को भारतीय संस्कृति, परंपराओं, और शास्त्रों के अध्ययन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- भारत सरकार द्वारा **20 अप्रैल 2020 में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय** की स्थापना की गयी जिसका मुख्य परिसर **नई दिल्ली** में स्थित है। यह विश्वविद्यालय भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन कार्य करता है और संस्कृत भाषा, साहित्य, तथा संस्कृति के अध्ययन, अनुसंधान और प्रचार-प्रसार के लिए प्रमुख संस्थान है।

निष्कर्ष:

भारतीय शिक्षा व्यवस्था वैदिक काल से लेकर वर्तमान आधुनिक काल तक अनेकों शैक्षिक परिवर्तनों से होकर गुजरी है, जहां वैदिक काल में शिक्षा का परम लक्ष्य आध्यात्मिक विकास था वहीं आज शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यावसायिक लक्ष्यों की प्राप्ति तक सीमित रह गया है। भारत सरकार वर्तमान शिक्षा को प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ने का कार्य कर रही हैं क्यूंकि वर्तमान युग सूचना एवं संचार प्रद्योगिकी का है जहां शिक्षा का स्वरूप पूरी तरह से डिजिटल और तकनीकी हो चुका है, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सिद्धांत जैसे नैतिकता, समग्र विकास, और व्यक्तिगत शिक्षा का समावेश एक सशक्त और संतुलित शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकता है। विकसित भारत 2047 की दृष्टि में, गुरुकुल के मूल्यों का पुनर्गठन और उनका डिजिटल शिक्षा में समावेश एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। गुरुकुल के सिद्धांत एवं मूल्य को आधुनिक डिजिटल शिक्षा के साथ मिलकर छात्रों को न केवल तकनीकी रूप से सक्षम बनाएंगे, बल्कि उन्हें जिम्मेदार, नैतिक और समाज के प्रति समर्पित नागरिक भी बनाएंगे। भारत सरकार के इन प्रयासों का उद्देश्य गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्राचीन मूल्यों और सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पुनःस्थापित करना है, ताकि छात्रों का समग्र विकास हो सके और वे एक संतुलित और नैतिक दृष्टिकोण के साथ समाज का हिस्सा बन सकें। यह न केवल भारतीय शिक्षा प्रणाली को सशक्त करेगा, बल्कि भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

डॉ नमिता शर्मा. (2023). शिक्षा का वैचारिक ढांचा . आगरा : एस बी दी पब्लिकैशन .

सौरभ अग्रवाल. (2022). शिक्षा की अवधारणात्मक रूपरेखा . आगरा : एस बी पी डी पब्लिशिंग हाउस .

प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा. (2018). भारतीय दर्शन की रूपरेखा. नई दिल्ली: एन ए बी प्रिंटिंग यूनिट .

डी सी मिश्रा. (2013). भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं विकास . कानपुर : अनुसंधान प्रकाशन .

Govt to set up five regional centres of Vedic education board | India News - The Indian Express

UGC will provide training to teachers on Vedic education system, 111 centers will be built in the country; | EduCare न्यूज: Dainik Bhaskar

Steps taken to encourage Yoga Education course | Government of India, Ministry of Education

Technology Development for Indian Languages (TDIL) | Ministry of Electronics and Information Technology, Government of India (meity.gov.in)

Formalising Vedic education: A look at India's new Vedic board MSRVSSB - India Today

Consider Vedic Board Qualifications For Admissions In Your Courses, Ugc Urges To Universities - Amar Ujala Hindi News Live - Ugc: